कलीसिया अध्याय 32

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **तीतुस 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (तीतुस 1-3) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में मुख्य वचन]* **(12) यूहन्ना 12:32**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(12) यूहन्ना 12:32। यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 14:1-31**

परिचय। यूहन्ना 14:1-31 का अध्ययन करने के लिए बाइबल के अध्ययन के पाँच कदमों का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 14-17 में प्रभु भोज पर की गयी यीशु की प्रार्थना और प्रवचन का वर्णन दिया गया है। यूहन्ना 14 में यीशु ने अपने चेलों को शान्ति दी। उसने प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा हमेशा उनके साथ रहेगा तथा चेले उससे भी बढ़कर काम करेगें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 14:1-31 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

14:1-4

खोज 1. **क्या कारण है कि मसीही लोग लगातार यीशु पर भरोसा कर सकते हैं।**

यीशु ने सच में कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं....और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" चेलों के हृदयों में बहुत प्रकार के भाव भरे हुए थे। वे इसलिए दु:खी थे क्योंकि यीशु ने उनसे कहा था कि वह उन्हें छोड़कर जाने पर है। वे *शर्मिन्दा* भी थे क्योंकि वे बस इस बात को लेकर आपस में झगड़ने में लगे रहे कि उनमें कौन सबसे बड़ा है। वे *दुविधा* में थे क्योंकि यीशु मसीह ने उन्हें बताया था उन्हीं में से एक उसे पकड़वायेगा, उनमें से एक उसका इनकार कर देगा, और वे सारे लोग उसे अकेला छोड़कर चले जाएगें। उनका विश्वास यह सोचकर *डगमगा* रहा था कि यह कैसे सम्भव है कि कोई उसके साथ विश्वास घात कर सके। इसके साथ साथ वे यीशु से प्रेम व उस से आशा कर रहे थे कि वह परिस्थितियों को बदल देगा। उनके विश्वास की परख हो रही थी। इसलिए यीशु ने उन्हें लगातार विश्वास करने की आज्ञा दी थी। वे इसलिए *भरोसा कर सकते हैं* क्योंकि यीशु मसीह अपने पिता की समानता में हैं और वह उन्हें नये स्वर्ग और नयी धरती पर अपने साथ लेने के लिए पुन: आ रहा है! वह उनसे इसलिए दूर जा रहा है ताकि वह उनके साथ रहने के लिए एक स्थान को तैयार कर सके। इसलिए उसका जाना कोई संकट नहीं वरन एक आशीष है! पिता का घर स्वर्ग है और भविष्य में मसीही लोग वहां पर रहने जा रहे हैं। मसीही विश्वासी पुन: मसीह के साथ मिलने का विश्वास करते हैं इसलिए वे उस पर भरोसा कर सकते हैं।

14:5-6

खोज 2. **प्रभु यीशु मसीह को किस कारण मार्ग, सत्य और जीवन कहा जाता है।**

आयत 6 में यीशु ने कहा "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता"।

(1) यीशु मसीह मार्ग है।

वह केवल परमेश्वर के पास पहुँचने का रास्ता ही नहीं *दिखाता* (जैसा भविष्यद्वक्ता करते हैं)। केवल यीशु मसीह *अपने आप* ही परमेश्वर के पास जाने का रास्ता है। यीशु मसीह परमेश्वर है। वह अपनी ईश्वरीय प्रकृति में वह अपने प्रत्येक ईश्वरीय कामों के उत्तरदायित्व के बराबर है क्योंकि उसके अन्दर उन कामों के

उत्तरदायित्व अनन्त की हद तक है। उदाहरण के लिए वह केवल प्यार करता ही नहीं है, लेकिन वह प्यार है और कुछ नहीं केवल प्यार। इसी तरह केवल वह वही करता जो सही है, लेकिन वह धार्मिकता है और कुछ नहीं केवल धार्मिकता आदि। इसी तरह वह पवित्रता भी है और वफादार भी है (1 कुरिन्थियों 1:10)। वह रास्ता, सच्चाई और जीवन है और कुछ नहीं केवल रास्ता, सच्चाई और जीवन। अपने प्रत्येक कामों, शब्दों और कामों के प्रति उत्तरदायित्व में यीशु मसीह चुने हुए लोगों और परमेश्वर के बीच मार्ग है।

यीशु मसीह परमेश्वर से मानव तक रास्ता है। परमेश्वर पिता से परमेश्वर पुत्र के द्वारा ही सारी ईश्वरीय बरकतें नीचे आती है। यीशु मसीह इंसानों से परमेश्वर तक का रास्ता भी है। केवल वह ही इंसानों से परमेश्वर तक स्वर्ग में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी का काम नहीं कर सकते। केवल वे ही परमेश्वर के निवास स्थान (स्वर्ग) में प्रवेश करेंगे जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं।

(2) परमेश्वर सत्य है।

यीशु मसीह अपने आप ही सत्य का जीता जागता नमूना है। पुराने नियम में पूरी तरह वास्तविकता की परछाई यीशु मसीह की तरफ इशारा करती है (कुल्लुसियों 2:17; इब्रनियों 10:1)। वह परमेश्वर के बारे में, मनुष्य के बारे में, उद्धार के बारे में और न्याय के बारे में छुपे हुए सत्य को प्रकट करता है। परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17) और हमारे ऊपर यीशु मसीह के द्वारा प्रकट किया गया। केवल यीशु मसीह सत्य के ऊपर निर्भर रहने का स्त्रोत भी है। परमेश्वर की अनन्त योजना मनुष्यों के लिए उद्धार भी केवल उसी के द्वारा दिखाया गया और कार्यान्वित किया गया (प्रकाशितवाक्य 5:5)। वह अदृश्य परमेश्वर की दिखाई देने वाली कल्पना (मानसिक चित्र) की अभिव्यक्ति है। (कुलुस्सियों 1:15; 2:9)। वह परमेश्वर की महिमा की दिखाई देने वाली चमक है और उसके ईश्वरीय होने का बिलकुल सही प्रतिनिधित्व है। (इब्रानियों 1:3)।

जो यीशु मसीह को जानता है वह परमेश्वर पिता को जानता है। (यूहन्ना 14:7)। यीशु स्वयं सत्य है जैसा झूठ(असत्य) विरोध। वह झूठ से घृणा करता है और झूठ का विरोध करता है। जो यीशु मसीह में विश्वास करता है वह सृष्टिकर्ता और बचाने वाले को ज्यादा से ज्यादा जानेगा जब तक कि वह उसे पूरी तरह न जान ले। सत्य उसे पूरी ताकत के साथ प्रभावित कर के उसके ऊपर पूरा नियंत्रण कर लेगा। सत्य उसे स्वतंत्र करेगा उसका मार्गदर्शन करेगा और उसे पूरी रीति से पवित्र करेगा (यूहन्ना 8:32; 16:13; 17:17)।

(3) यीशु मसीह जीवन है।

- "जीवन" यीशु मसीह में जीवन का अर्थ हैं कि परमेश्वर की सारी महिमा का चित्रण यीशु मसीह में हैं (यूहन्ना 1:4)। क्योंकि यीशु मसीह में जीवन है, वह मसीही लोगों के लिए जीवन का स्त्रोत है (यूहन्ना 1:4; 3:16)।
- जैसे "जीवन की रोशनी" यीशु मसीह परमेश्वर के ईश्वरीय चरित्र के लोगों को दिखाता है।
- जैसा "जीवन का शब्द" यीशु परमेश्वर की इच्छा को मसीहियों के ऊपर दर्शाता है ताकि वे परमेश्वर पिता के साथ संगती रखें (यूहन्ना 8:12; 6:68)।

वह संसार में इसलिये आया कि मसीही लोग जीवन पाएँ और बहुतायत का जीवन (यूहन्ना 10:10)। मसीह अपने आप में जीवन है जैसा कि उसने मृत्यु का विरोध किया। उसने शारीरिक मृत्यु, आत्मिक मृत्यु और नरक अनन्त मृत्यु पर विजय प्राप्त की। जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे आत्मिक जीवन पाएँगे शारीरिक मृत्यु से पुनरुत्थान पाएँगे और सदा की नरक की मृत्यु का दुख कभी नहीं उठायेंगे। यीशु मसीह में जीवन बदलेगा और उसे यीशु मसीह को विरासत जो कि नये स्वर्ग और नई पृथ्वी की है का वारिस होने के

लिये साझीदार बनाएगा। जैसा कि "मृत्यु" का अर्थ परमेश्वर से अलग होना। "जीवन" का अर्थ परमेश्वर के साथ सहभागिता! यीशु मसीह ने मुझे पापों से आजाद किया है और मुझे स्वच्छंद किया है ताकि मैं परमेश्वर से मिल सकूँ और परमेश्वर के साथ भरपूर संगति कर सकूँ।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 13:1-38 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछें जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

14:7-9

प्रश्न 1. **परमेश्वर को वास्तव में जानने का क्या मतलब है?**

ध्यान दें। यूहन्ना 14:7-9 में यीशु कहता है, "यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को जानते; और अब उसे *जानते* हो, और उसे *देखा* भी है।" जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।" यीशु कहता है कि वह ही केवल मार्ग है जो परमेश्वर तक पहुँचाता हैं, वह ही सत्य है जो लोगों को परमेश्वर के लिये पवित्र बनाता है, वह जीवन है, जो परमेश्वर के साथ भरपूरी संगति देता है, इस बात को उसके चेले भी नहीं समझ सकें। यदि उन्होंने उसके वचन को ध्यान पूर्वक सोचा होता और कामों को देखा होता तो वे उसे यीशु को और अच्छे तरीके से जानते(ग्रीक: जीनोस्को)(परफेक्ट टैंस)। और तब वे पिता परमेश्वर को *लगातार* जानते (देखने, अध्ययन करने और अनुभव के द्वारा)(ग्रीक: जीनोस्को)। तब से उसके चेले उसे *लगातार* जानते रहें(ग्रीक: जिनोस्को)(प्रजेन्ट कन्टीनुअस टैंस) और उसे देखा ताकि उसकी आकृति उनकी आँखों के सामने *सदा* रहे(ग्रीक: हेयोराका)(परफेक्ट टैंस)!

परमेश्वर पिता को देखने, समझने, पहचानने का पक्का दिखने वाला अवसर व लाभ किसी को भी पुराने नियम में नहीं मिला जैसा कि अब नये नियम में यीशु मसीह के द्वारा हो रहा है। मूल भाषा में क्रिया (प्रफेक्ट टैंस) इशारा करता है कि यीशु मसीह में परमेश्वर पिता के आत्मिक ज्ञान व दर्शन के अनुबंधित परिणाम हैं। विश्वासी परमेश्वर पिता को यीशु मसीह में सदा देखता और जानता रहेगा!

पूरा गद्यांश साफ साफ इशारा करता है कि यीशु मसीह के बिना परमेश्वर को समझना और उद्धार असम्भव है। परमेश्वर का आखिरी दर्शन व उद्धार की योजना केवल यीशु मसीह में ही अनुभव की जाती है। (इब्रानियों 1:1-2) संसार में कोई भी धर्म प्रकति और मानव इतिहास में अदृश्य परमेश्वर को उजागर नहीं करता है। (परमेश्वर को यीशु मसीह में मानव की प्रक्रति लेने के द्वारा) इसलिये परमेश्वर को जानने का अर्थ है कि परमेश्वर को आत्मिक रूप में (आत्मिक आखों के द्वारा) यीशु मसीह में देखना है। उसने यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को खोज लिया है। वह यीशु मसीह में बचाया गया और पवित्र किया गया है। अब वह मसीह के द्वारा परमेश्वर की भरपूरी सहभागिता में है।

14:12

प्रश्न 2. **उससे बड़े काम कौन से हैं जो मसीही करेगें?**

ध्यान दें। यूहन्ना 14:12 में यीशु अपने चेलों से वायदा करता है, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है; ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा; वरन इस से भी बड़े काम करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता"। यह चेलों के लिये लाभ की बात है कि यीशु पिता के पास स्वर्ग में जा रहा है, क्योंकि इससे वे और ज्यादा प्रभावशाली हो जायेगें। वे उन को कर सकेगें जो यीशु कर रहा था वह भौतिक या सांसारिक अधिकार आश्चर्यकर्म हैं। लेकिन वे इससे भी बड़े बड़े काम करेगें वे आत्मिक अधिकार आश्चर्यकर्म हैं।

यूहन्ना 5:20-24 के अनुसार यीशु के काम एक निश्चित हद तक थे जो कि सांसारिक अधिकार के आश्चर्यकर्म थे जैसे कि बीमारों को चंगा करना, मुर्दा को जिलाना, और वे सब बड़े पैमाने पर यहूदियों के बीच में किये गये थे। चेलों के महान काम ऊंचे चरित्र और विशाल हद के होंगे। चेलों के बड़े बड़े कामों में खास तौर पर लोगों का परिवर्तन करना और उनको संसार की सभी जातियों ओर राज्यों में से चेलें बनाना होगा। यीशु अपने चेलों के द्वारा अपने काम को संसार में करने के लिये सोच रहा है। वह यूहन्ना 12:23-32 जैसे पैरा के विषय में सोच रहा थी। जहां वह सब लोगों को अपनी तरफ खींच सकेगा और यूहन्ना 17:20 के अनुसार वह सब लोगों के लिये प्रार्थना करेगा जो इस में चेलों के सुसमाचार के द्वारा विश्वास करेगें। लेकिन ये सब बड़े बड़े काम यीशु मसीह की मृत्यु के बाद और के पुनरुत्थान तथा यीशु की आत्मा को चेलों पर उण्डेलने के बाद किये जायेगें।

14:13-14

प्रश्न 3. **क्या मसीही प्रार्थना में कुछ भी माँग सकते हैं।**

ध्यान दें।

(1) प्रेरितों के काम में प्रार्थना और अद्भुत काम।

यूहन्ना 14:13 में यीशु अपने चेलों से वायदा करता है, "जो कुछ भी तुम मेरे नाम में माँगोगे मैं कर दूँगा" इस आयत को हमें हद के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। अन्यथा लोग उसके वायदे का गलत इस्तेमाल करेगें और सब तरह की केवल अपनी ही चाहने की चीजों की माँगेंगे। यह पद 12 के बड़े बड़े कामों को बताता है। पद 12 के महान कामों के लिये पद 13 में चेलों को प्रार्थागओं की आवश्यकता है! प्रेरितों के काम में शारीरिक अधिकार तथा आत्मिक अधिकार दोनों तरह के काम प्रार्थना से जुड़े हुए थे। उदाहरण के लिये प्रेरितों 4:24 में प्रार्थना शारीरिक सुसमाचार की घोषणा की थी। प्रेरितों 6:4 में परमेश्वर का वचन फैलाने तथा जो मसीही विश्वास में आज्ञाकारी बनें उनकी संख्या तेजी से बढ़ने के लिये प्रार्थना करना। प्रेरितों 10:2,9 में पतरस तथा कुर्नेलियस की प्रार्थना के परिणाम स्वरूप प्रथम गैर यहूदी का मसीह विश्वास में परिवर्तन हुआ। प्रेरितों 12:5,12 में प्रार्थना के परिणाम स्वरूप पतरस कैद से छुड़ाया गया!

(2) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना।

यीशु मसीह जिन प्रार्थानाओं का उत्तर देगा:- उसके नाम में प्रार्थना करनी चाहिये। "यीशु मसीह में" प्रार्थना का अर्थ है कि उद्धार के पूरे काम पर आधारित उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना। जो उसने दर्शाया है

वह बाइबल में लिखा है। क्योंकि उसने सभी गुप्त बातों को अपनी इच्छा में अनुसार नहीं दिखाया है। मसीही लोगों को विश्वास में प्रार्थना करने की आवश्यकता है विश्वास करना है कि उसका उत्तर हमेशा सबसे अच्छा है! मसीहियों को हमेशा प्रार्थना करनी चाहियें कि "मेरी इच्छा नहीं, लेकिन तेरी इच्छा पूरी हो"(लूका 22:42) यीशु का उत्तर "हाँ" कभी "नहीं" तथा कभी "इन्तजार" होगा। मसीही जो इस तरह प्रार्थना करते है वे विश्वास कर सकते हैं इस तरह प्रार्थना करते है वे विश्वास कर सकते हैं कि जो भी इसके बाद होगा वह परमेश्वर की बिलकुल सही इच्छा के अनुसार होगा।

14:16

प्रश्न 4. पवित्र आत्मा दूसरा सलाहकार क्यों कहलाता है?

ध्यान दें। ग्रीक भाषा में सलाहकार शब्द को "पराक्लीट"(पवित्र आत्मा)(ग्रीक पराक्लेटोस)कहते है। कर्मप्रधान भाषा में इसका अर्थ एक "वकील" या "एक सलाहकार" "कोई आपकी सहायता कहने वाला" नहीं है जैसा कि लेटिन भाषा की बाइबल के अनुवाद के अनुसार सलाहकार का अर्थ कर्मप्रधान नहीं है। जबकि इसका अर्थ दुसरे ग्रीक साहित्य के अनुसार कृतिवाचक "मददगार", "मध्यस्त करने वाला" या प्रतिनिधि है।

(1) यीशु मसीह परमेश्वर पिता के साथ जो स्वर्ग में हैं मसीही लोगों का प्रतिनिधि (ग्रीक पराक्लेटोस) है (1 यूहन्ना 2:1)।

यीशु मसीह परमेश्वर और मसीहियों के बीच मध्यस्थ है। उसने मसीहियों के लिये स्वर्ग में प्रवेश किया ताकि परमेश्वर की उपस्थिति में दिखें (इब्रानियों 9:24)। वह सक्रियता से स्वर्ग में मसीहियों के लिये विनती करता है।

(2) पवित्र आत्मा यीशु मसीह और मसीहियों का जो पृथ्वी पर है प्रतिनिधि (ग्रीक पराक्लेटोस) है (यूहन्ना 16:13-15)।

पवित्र आत्मा मसीह और मसीहियों के बीच मध्यस्थ है। वह सक्रियता से मसीह के वचनों का मसीहियों को वर्णन करता है जो संसार में हैं।(यूहन्ना 14:6; 15:26; 16:14)। पवित्र आत्मा मसीह के उद्धार के पूरे काम को पृथ्वी पर रहने वाले लोगों पर लागू करता है।

पवित्र आत्मा मध्यस्थ यीशु मसीह की तरह ही दूसरा प्रतिनिधि है। पवित्र आत्मा यीशु मसीह से सम्मानित है लेकिन फिर भी यीशु मसीह की तरह ईश्वरीय प्रकृति है और परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पुत्र के सातत्व में हैं।

14:25-26

प्रश्न 5. यीशु मसीह की शिक्षा और पवित्र आत्मा की शिक्षा में क्या अन्तर है?

ध्यान दें। यीशु कहता है, "यह सब जो मैंने तुमसे बोला जब मैं तुम्हारें साथ था पवित्र आत्मा तुम्हें सब चीजें सिखाएगा और सब बातों की याद दिलाएगा जो मैंने तुमसे कही है।" इन आयतों में यीशु मसीह अपनी शिक्षा जब वह पृथ्वी पर था और पवित्र आत्मा की शिक्षा जब वह भव्यतापूर्वक स्वर्ग में उन्नत किया गया में अन्तर बताता है। जब यीशु मसीह पृथ्वी पर था उसने उन्हें बहुत बातें सिखाई। पवित्र आत्मा यीशु मसीह की शिक्षा लगातार सिखाता है। चार सुसमाचार यीशु मसीह की शिक्षा से भरे हैं जब वह पृथ्वी पर था।

लेकिन कुछ सबसे खास घटनाएं अभी नहीं हुई थी। यीशु को मरना था, मुर्दों में से उठाया जाना था, स्वर्ग में उठाया जाना था, स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठना था और पवित्र आत्मा उण्डेलना था। यीशु ने कहा पृथ्वी पर से उसके शारीरिक पुनरुत्थान के बाद आनेवाला पवित्र आत्मा बहुत सी बातों को और साफ तरीके से बताएगा। यीशु ने वायदा किया कि पवित्र आत्मा उसके चेलों को वह सब आवयश्क बातों को सिखाएगा जो कि उद्धार और मसीह की गवाही के उनके काम के लिये आवश्यक हैं। और उसने वायदा किया कि पवित्र आत्मा उन्हें हर बात का स्मर्ण दिलाएगा जो उस ने उन्हें सिखाई थी जब वह पृथ्वी पर था। पवित्र आत्मा की शिक्षा के द्वारा यीशु मसीह अपनी भविष्यद्वाणी की बातों को पूरा करता रहेगा। प्रेरितों की पुस्तक तथा प्रेरितों के पत्र यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के बाद पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह की शिक्षाओं से भरे हैं।

(1) पवित्र आत्मा उन सत्यों का स्मरण दिलाएगा जो यीशु ने बोले थे जब वह पृथ्वी पर था।

वह पुराने सत्यों को क्यों स्मरण करेगा। क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह अपने चेलों को उन सत्यों की जो उसने उन्हें जब वह पृथ्वी पर था सिखाया था गहरी समझ देगा। जब ये वचन पहली बार पृथ्वी पर बोले गये थे तब वे कठिनाई से लिखे गये थे। (यूहन्ना 2:22; 12:16)। इसलिये पौलुस कहता है (1 कुरिन्थियों 2:13)," यह जो हम बोलते हैं मनुष्यों के ज्ञान की बातों में नहीं परन्तु *आत्मा की सिखाई हुई बातों में,* आत्मिक वचनों में आत्मिक सत्यों को समझाते है"।

(2) पवित्र आत्मा चेलों को नये सत्य सिखाएगा।

वह नये सत्य क्यों सिखाएगा? इस वायदे और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच ये खास घटनाएँ होगी: मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना, मरने के बाद जी उठना, स्वर्गरोहण, सिंहासन पर बैठना और पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना। ये घटनाएं समझाई जानी थी ताकि वे लोग जो पृथ्वी पर रहते हैं इन घटनाओं के महत्व को समझ सकें, खास तौर पर मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के महत्व को समझें।

(3) प्रेरितों को पवित्र आत्मा की आवश्यकता थी।

यीशु मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा की आवयश्कता थी क्योंकि वे मसीह के आँखों देखे और कानों सुने गवाह थे।

- वे उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान की शिक्षाओं के अधिकृत गवाह होंगे।
- वे मसीह कलीसिया को यहूदियों, सामरियों तथा गैर यहूदियों में स्थापित करने में उसके यंत्र होंगे।
- वे नये नियम की पुस्तक को लिखने में उसके यंत्र होंगे।
- वे यीशु मसीह की शिक्षाओं के अधिकारिक तौर पर व्याख्या करने वाले होंगे इस तरह प्रथम मसीही मत को स्थापित करेगें।
- वे नये अगुवों (प्राचीन) नयी कलीसिया में नियुक्त करेगें (प्रेरितों 14:23)

(4) आज मसीहियों को पवित्र आत्मा की आवयश्कता है।

वही पवित्र आत्मा है:

- मसीहियों को बाइबल में खुदा(मसीह) का प्रकाशन समझने की शिक्षा देता है। (अनुचित या मनमाना नहीं नये प्रकाशन इच्छा पत्र से मनुष्य के मस्तिष्क में)(यूहन्ना 16:13; 1 यूहन्ना 2:27)।

- मसीहियों को याद दिलाता है कि प्रतिदिन की जीवन की परिस्थितियों में यीशु उनसे क्या चाहता है कि क्या करें।
- मसीहियों को प्यार, बुद्धिमानी, बहादुरी, और पृथ्वी पर यीशु मसीह की गवाही देने की शक्ति देता है।(मत्ती 10:19-20; 2 तीमुथियुस 1:7)।

14:27

प्रश्न 6. **"शान्ति" शब्द का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें। बाइबल में "शान्ति" शब्द के दो प्रथम अर्थ है।

- नकारात्मक, "शान्ति" का अर्थ है "नष्ट करने वाली बुरी चीजों की अनुपस्थिति" झगड़े, लड़ाई गुस्सा, ज़िद, चिन्ता, डर, दंगैत, होने की भावना, नैतिक युद्ध आदि।
- सकारात्मक "शान्ति" का अर्थ है उन चीजों की उपस्थिति जो पहले टूटे हुओं को ठीक कर सकें: टूटे सम्बधों को फिर से ठीक करना, हो चुके उदेश्यों को फिर ले लेगा, चोट पहुँचाई हुई भावनाओं को ठीक करना, उन सारी चीज़ों को प्रदान करना जिन्हें परमेश्वर मसीही जीवन में देना चाहता है।

14:28-29

प्रश्न 7. **किस तरह परमेश्वर पिता यीशु से बड़ा है?**

ध्यान दें। यीशु कहता है, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह आए तो तुम विश्वास करो। पुराने और नये नियम प्रकट करते हैं कि यीशु मसीह की दो स्पष्ट तथा भिन्न प्रकति है। यीशु मसीह की मानव प्रकति के कारण परमेश्वर पिता यीशु मसीह बड़ा है।

(1) पुराने नियम में यीशु मसीह की मानव प्रकृति।

(यशायाह 740-680 बी.सी.) क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी (यशायाह 9:6; 7:14)।

(2) पुराने नियम में यीशु मसीह की ईश्वरीय प्रकृति।

यशायाह लगातार कहता है "और उसका नाम अद्भभुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा" (यशायाह 9:6) यशायाह 9:6 में यीशु मसीह को पराक्रमी परमेश्वर कहा गया है। (इब्रानी: जाह्वेह), यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है उसे "पराक्रमी परमेश्वर" (इब्रानियों:एलगायीबोर) तथा "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" कहा गया है।

(इब्रानी:एडोवाई पाहेवह तशीनाओभ), वह हैं कि प्रभु स्वर्गीय फरिश्तों की सेनाओं का यहोवा है।

(3) यूहन्ना सुसमाचार में यीशु मसीह की मानव प्रकृति।

केवल जब यूहन्ना 14:28 को पूरी बाइबल से अलग करके अनुवाद किया गया तो यह निष्कर्ष निकाला गया कि यीशु मसीह परमेश्वर या सर्वशक्तिमान परमेश्वर नहीं है। यह निष्कर्ष गलत है!

यूहन्ना के सुसमाचार के इस पद के अनुसार इस उल्लेख से यह बात साफ होती है कि यहाँ उसकी बिना पैदा की हुई ईश्वरीय प्रकृति की चर्चा है, लेकिन उसकी पैदा की हुई मानव प्रकृति है। आदमी और परमेश्वर के बीच मध्यथ के अनुसार अपने आप एक मानव है इसलिए उसकी पैदा हुई मानव प्रकृति यीशु मसीह परमेश्वर पिता से कम या उसके अधीन है। जो कि आत्मा हैं और इसलिये जितने पैदा हुए हैं उनसे वह बहुत महान हैं। और यहाँ परमेश्वर पिता की ईश्वरीय प्रकृति को यीशु मसीह की मानव प्रकृति से तुलना करता है जबकि वह एक गड़रिये के रूप में पृथ्वी पर उपस्थित है (यूहन्ना 10:27)।

यूहन्ना 14:28 यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान से पहले के नियम में बताता है कि यीशु मसीह उस समय यीशु उन लोगों के लिए पापों के लिए दुख उठा रहा था और उनके बदल मर गया जो उस पर विश्वास करते हैं। जब यीशु मसीह ने कहा कि परमेश्वर पिता उसको अधिक है तब वह अपने चेलों को तैयार कर रहा था कि वह मरने जा रहा है (मरकुस 8:31; 9:31: 10:32-34)। इस तरह अपने आप को नम्र करने या अपमानित करने की दशा (उसके पैदा होने और मृतकों में से जी उठाना) में यीशु मसीह परमेश्वर के "अधीन" या उससे "कम" था।(फिलिप्पियों 2:6-8)।

(4) यूहन्ना रचित सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह का ईश्वरीय स्वभाव।

यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान, स्वर्ग पर उठा लिये जाने सिंहासन पर विराजमान होने के बाद वह कभी भी परमेश्वर पिता से कम या उसके अधीन नहीं है। (यशायाह 45:21-23; फिलिप्पियों 2:9-11)। उसे फिर से वही महिमा मिली जो उसके पास मानव प्रकृति को धारण करने से पहले थी (यूहन्ना 17:5)। तन परमेश्वर का स्वर्ग में सिंहासन परमेश्वर *और मेमने का* है (इब्रानियों 1:8; 12:2; प्रकाशितवाक्य 5:6;12:5;22:3)।

लूका 16:8 के अनुसार "संसार के बेटों (ग्रीक: हुईओई)" विचार की अभिव्यक्ति में वे लोग हैं जिनमे पाप की दुनिया के चरित्र है। और "रोशनी के बेटों (ग्रीक: हुईओई)" की अभिव्यक्ति उन लोगों से है जो रोशनी का चरित्र रखते हैं। इसी तरह जब यीशु कहता है "मैं परमेश्वर का बेटा हूँ (ग्रीक: हुईओई)" (यूहन्ना 10:36) वह सच्चाई की अभिव्यक्ति करता है कि वह परमेश्वर होने के सारे कारण (गुण) धारण किये हुए हैं यह कि वह परमेश्वर है। यह कि वह परमेश्वर है। इसलिये यीशु कहता है और मैं पिता में हूँ"(यूहन्ना 10:38)। "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"(यूहन्ना 14:9)। इसीलिये यूहन्ना का सुसमाचार इन शब्दों से शुरू होता है, "आदि में वचन था और वचन ही परमेश्वर था"(यूहन्ना 1:1)। और "वचन देहधारी हुआ" (यूहन्ना 1:14)। यीशु मसीह के ईश्वरीय महत्वपूर्ण गुणों के कारण वह परमेश्वर की पूरी समानता में हैं।

(5) प्रेरितों की पत्री के अनुसार यीशु मसीह का मानव चरित्र।

पृथ्वी पर एक विशिष्ट रूप मे देह धारण करके परमेश्वर ने यीशु मसीह में मानव प्रकृति को धारण किया, यीशु मसीह केवल अपने आप को मनुष्य ही नहीं बनाया परन्तु सभी मनुष्यों का सेवक भी बनाया (मरकुस 10:45) और खोए हुए लोगों को बचाने के लिये वह मृत्यु का आज्ञाकारी भी हो गया था (फिलिप्पियों 2-7-8)। और दूसरी आगमन पर यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ के रूप में (यह कि मानव प्रकृति का काम है) अपने आप को परमेश्वर पिता के "अधीन" कर देगा ताकि "परमेश्वर ही सबकुछ हो जाये" (1 कुरिन्थियों 15:28)।

(6) प्रेरितों की पत्रियों के अनुसार यीशु मसीह का ईश्वरीय चरित्र।

यीशु मसीह परमेश्वर का स्वरूप है और परमेश्वर के बराबर है। (फिलिप्पियों 2-6)।

यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर की पूर्णता यीशु मसीह में निवास करती है।" (कुलुस्सियों 1:19 "शारीरिक रूप में यीशु मसीह में परमेश्वर की पूर्णता है" (कुलुस्सियों 2:9) "यीशु मसीह में परमेश्वर की महिमा की रोशनी तथा परमेश्वर होने का बिलकुल सही प्रतिनिधित्व है"(इब्रानियों 1:3)।

यीशु मसीह की दो प्रकृति है। जैसा कि परमेश्वर पिता के तुल्य है और जैसा कि मनुष्य (मानव शारीर धारण करने के दौरान) वह परमेश्वर पिता *के अधीन* है। लेकिन उसकी दो प्रकृति कभी अलग नहीं हुई क्योंकि वह कभी परमेश्वर पिता तथा पवित्र आत्मा से अलग नहीं हुआ। मसीहियों को यीशु मसीह में "अदृश्य सर्वशक्तिमान परमेश्वर का दृश्य प्रकटीकरण देखना चाहिये"(कुलुस्सियों 1:15)।

(7) यीशु मसीह परमेश्वर पिता की तरह आदर प्राप्त करता है।

यीशु कहता है "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है"।(मत्ती 28:18)।

पौलुस कहता है कि परमेश्वर की योजना में पृथ्वी तथा स्वर्ग की सभी चीजें वह मसीह में एकत्र करें (इफिसियों 1:10) और "वह(यीशु) सारे आकाश से ऊपर चढ़ गया कि सब कुछ परिपूर्ण करें"(पूरी तरह परिपूर्ण)(ग्रीक:प्लेरो)(इफिसियों 4:10)। पतरस कहता है कि स्वर्गदूत और अधिकारी तथा सामर्थी उसके अधीन किये गये हैं"(1 पतरस 3:22)।

कोई भी यीशु मसीह को परमेश्वर पिता से कम समझकर उसका निरादर न करें। परमेश्वर ने सारा न्याय करने का काम पुत्र(यीशु मसीह) के अधीन किया है ताकि सब पिता की तरह पुत्र का भी आदर करें।" पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता का जिसने उसे भेजा है आदर नहीं करता"(यूहन्ना 5:22-23)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 14:1-31 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(***याद रखें*** कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 14:1-31 से व्यक्तिगत व्यावहारिक उपयोग के सम्भव उदाहरण।

14:6,9। यीशु मसीह को अच्छे से जानने के द्वारा परमेश्वर पिता को जानें।

14:12। यह विश्वास करें कि यीशु मसीह के पास आपको इस दुनिया में निपुण करने के लिये महान काम है।

14:13। मजबूत बनें तथा प्रार्थना करें ताकि परमेश्वर आपके द्वारा संसार में महान काम कर सकें।

14:21,23। परमेश्वर यीशु मसीह की शिक्षा तथा उसकी आज्ञाएं अपने कर्मों में जायें। तब यीशु मसीह अपने आप को आप के ऊपर प्रगट करेगा और अपना घर आपके साथ बनाएगा।

14:26 पवित्र आत्मा को अनुमति दें ताकि वह आपको यीशु मसीह की शिक्षाओं का महत्व समझा सकें।

2. व्यक्तिगत व्यवहारिक उपयोग के उदाहरण यूहन्ना 14:1-31 से।

मैं इस बात की सच्चाई का आनन्द उठाना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर को जानता हूँ यीशु मसीह में परमेश्वर को जानता हूँ यीशु मसीह ने परमेश्वर पिता तथा उसके उद्धार को रहस्य मुझ पर खोला है। "परमेश्वर को जानने का मतलब मैंने परमेश्वर पिता को मसीह के द्वारा देख लिया है। इसका मतलब है कि मैं आजाद हो गया हूँ और यीशु मसीह के द्वारा पवित्र हो गया हूँ। और इसका मतलब है कि मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेरी हमेशा की संगति हो गयी है। मैंने मसीह को स्वीकार कर लिया है और इसलिए मैं परमेश्वर को देख सकता हूं। मैं यीशु मसीह के द्वारा बाइबल में सत्य का अध्ययन करता हूं और मैं ज्यादा से ज्यादा पाप हो गया हूं। बावजूद मैं यीशु मसीह में बने रहने का प्रयास करता हूं तथा उन्मुक्त होकर परमेश्वर की सहभागिता में रहूँगा।

मैं मसीह पर विश्वास करना तथा उसके महान कामों में सम्मिलत होना चाहता हूँ। *महान कार्य गैर यहूदी राष्ट्रों का परिवर्तन है*! और इन महान कार्यों को मेरी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक(6:4) प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर का वचन तेजी से फैला तथा एक बड़ी संख्या में लोग मसीही विश्वास में आज्ञाकारी बनें। मैं भी परमेश्वर से प्रार्थना करना और परमेश्वर पर यकीन करना चाहता हूँ कि इसी तरह मेरी प्रार्थना के उत्तर में मेरा गाँव, मेरा प्रदेश तथा देश में भी परिवर्तन आ जाएगा।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 14:1-31 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2. यूहन्ना 14 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियां 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4.याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(13) यूहन्ना 13:34-35।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।